बच्चे आत्म-अभिमानी होकर बैठे हो? 84के चक्र का ज्ञान बुधी में है? ड्रामा अपने बादशाही जन्मों का ज्ञान है। विराट रूप स्वरूप का भी चित्र है नाँ। इसका ज्ञान भी बच्चों को है कि कैसे हम 84जन्म लेते है। मूल वतन से तो पहले-2 नम्बर आते है। फिर पहले-2 आते है दैवी देवता धर्म में। यह सारा बुधी मे है। इसमें कोई भी चित्र आद की दरकार नही है। बाबा तो धीरे-2 चित्रों को भी उड़ाते ही जा क्योंकि यह चित्र सब है भक्ति मार्ग के। उनपर फिर करेक्शन करके बच्चों को समझाने लिये यह बनाये गये है। नही तो इनकी दरकार है नही। सी नोईवल अब चित्रो के लिये कहा जाता है। परन्तु वो भक्ति मार्ग के है इनकरेक्ट चित्र। यह है करेक्ट। हमको कोई चित्र आद याद नही करना है। ज्ञान मे तो या सिर्फ होगा। कि हम आत्मा हूँ मूल वतन की रहने वाली। यहाँ हमारा पार्ट है। यह भूलना नही चाहि यह तो मनुष्य सृष्टी के चक्र की हीवाल है और बहुत आसान है। इसमे चित्रों की तो बिलकुल ही दरका नही है। क्योंकि यह सब भक्ति मार्ग ही की तो चीजें है। ज्ञान मार्ग मे तो पढाई ही है। पढाई मे चि की दरकार नही है। धीरे-2 तो यह भी उड जावेगा। यह तो बेसियों को समझाने के लिये चित्र रखे है। चित्र आद सब है भक्ति मार्ग के। उनको सिर्फ करेक्ट किया गया है। जैसे कहते है कि गीता का भगवान कृष्ण है। हम कहते है कि शिव है। यह भी बुधी से समझने की बात है। बुधी मे यह न रहती है कि हमने तो 84का चक्र लगाया है। अब हमको पवित्र बनना है। पवित्र बन कर फिर नये सिर चक्र लगावेंगे। यह है सच्च सार। वो ही बुधी मे रखना है। जैसे कि बाप की बुधी मे है नं वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी। वो 84जन्मों का चक्र कैसे फिरता है। तुम्हारी भी बुधी मे है। पहले तो हम सूर्य फिर चन्द्रवंशी बनते है। चित्रों की दरकार है नही। सिर्फ मनुष्यों को समझाने लिये ही यह बनाये गये तो भक्ति मार्ग का तरीके है नो। इनपर बाप करेक्शन कर बताते है कि ऐसे-2 होना चाहिये। ल-न चित्र मे तखित होनी चाहिये। यह चित्र है सब भक्ति मार्ग की चीज। भक्ति तुमार्ग मार्ग बिलकुल है। ज्ञान मार्ग मे तो सिर्फ बाप कहते है मनमनाभव। बस। चित्रों की दरकार नही है। जैसे यह चित्रभुज का चित्र है नो। यह भी भक्ति मार्ग का है। चर्तुभुज को समझते कोई है। अथवा जैसे र का चित्र है। वो भी समझते नही है। तो यह दिखाना पड़ता है कि रावण राज्य है। वो भी समझते है। तो यह दिखाना पड़ता है कि रावण राज्य है। चित्र बने नही चाहिये। बुधी मे सारा ज्ञान होना तुम बच्चो की बुधी मे है, तुम बिना चित्र के भी समझा सकते हो। 84का चक्र सारा बुधी मे है। चित्र दवारा तो सिर्फ सहज करके समझाया जाता है। उनकी दरकार है नही। बुधी मे है कि हम पहले तो सूर्यवंशी बने के है। फिर चन्द्रवंशी घराने के बने। यहाँ तो दुख बहुत है। जिसको ही स्वर्ग कहा जा यही चित्रो पर समझाते हो। पिछाड़ी मे तो बुधी मे यही ज्ञान रहेगा कि अब जाना है घर फिर चक्र लगेगा। सीढी पर भी समझाया जाता है कि मनुष्यों को सहज हो। तुम्हारी बुधी मे भी यह सा है कि कैसे हम सीढी से नीचे उतरते है। फिर बाप चढ़ती कला मे ले जाते है। बाप कहते है कि तुमको इन चित्रों आद का सार समझाता हूँ। चित्रो को भी करेक्ट करना पड़ता है। हम सूक्ष्म वतन की बात थोडी करते है। यह तो समझाया जाता है कि हम सूर्यवंशी चन्द्रवंशी फिर वैश्य वंशी अब हम ब्रह्माकुमार-कुमारी बने है। अब हम घर वापस जाते है। फिर सूर्यवंशी बनेंगे। इसमे चित्र किस भक्ति मार्ग मे ढेर अथाह चित्र है। उनमे से छाँट कर अलग कर फिर उसमे करेक्शन की जाती है। जैसे है तो उस पर समझा सकते है कि यह 5000वर्ष का चक्र है। अगर लाखों वर्ष होते तो दुनिया कि बढ जाती। क्रिश्चियन्स का दिखलाते है 2हजार वर्ष। उसमे कितने मनुष्य हुये है। 5000वर्ष मे कि मनुष्य होते है वो सारा हिसाब हम बताते है। सतयुग मे पवित्र होने कारण थोडे लोग होते है।

... होते तो ... [illegible] ... है क्योंकि ...

ी मैद मैं। आदम शुमारी का हिसाब तो निकालते है नो। हिन्दुओं की आदम शुमारी कम दिखवाते है।
बचनस बहुत बनगये है। तो वास्तव मे इस ज्ञान मे चित्रो की तो दरकार ही नही है। जो अच्छे-2 समझ
ा सके है। विना चित्रो कैसे समझा सक्ते है। विचार कर सक्ते हो कि इस समय 500 करोड है।तो
ई दुनियाँ मैं कितने थोडे मनुष्य होगें। अब तो पुरानी दुनियाँ है जिसमे ही इतने मनुष्य है। फिर
ई दुनियाँ कैसे स्थापन होती है।कौन स्थापन करता है। यह बाप ही समझाते है। वो ही ज्ञान का सागर
। तुम बच्चो को सिर्फ यह 84का चक्र ही बुधी मे रखना है। अभी तो हम नर्क से स्वर्ग मे जाते है
ो अन्दर मे खुशी होगी नो सतयुग मे दुःख की कोई बात होती नही है। ऐस कोई अप्राप्त वस्तु नही
सके ो प्राप्ती के लिये पुरुर्षार्थ करें। यहाँ पुरुर्षार्थ करना पड़ता है यह चाहिये, यह मशीन चाहिये।
ो तो सभी ही सुख मोजूद है। जैस कोई महाराजा होते है तो उनके पास सभी सुख मोजूद रहते है।
ीब के पास तो सब सुख मोजूद नहीहोते है। परन्तु यह तो है कलयुग; तो बिमारियाँ आद सब कुछ है।
ो तुम पुरुर्षार्थ करते हो नई दुनियाँ मे जाने लिये। स्वर्ग नर्क यहाँ ही होता है। बाकी यह सूक्ष्म वतन
तो रमत गमत के लिये है।जब कि कर्मातीत अवस्था हो , समय पास करने लिये यह रमत गमत
के खेल पाल है। जब कर्मातीतअवस्था आ जोवगी फिर बस। तुमको यह याद रहगा कि हम आत्मा ने अब
4जन्म पुरे किये है। अब हम जाते है घर। फिर आकर सतोप्रधान दुनियाँ मैं सतोप्रधान पार्ट बजावेंगें।
ह ज्ञान बुधी मे लटका हुआ है। इसमे चित्रो आद की दरकार नही है। जैस बैरिस्टरी की किताब पढ़ते है।
स्टर बन गये फिर बस। जो पास्ट मे पढे वो खलास। रिजल्ट निकला । प्रारब्ध ल । तुम भी पढ़ कर
र जाकर राजाई करेंगें। वहाँ पर नालेज की दरकार नही होती। इन चित्रो मे भी अब रौंग राईट
क्या है वो तुम्हारी बुधी मे है। बाप बैठ समझाते है कि यह ल-न कोन है। यह विष्णु क्या है।
~~या मे लिये पर मनुष्य मूंझ जाते है। विष्णु ... के पुजा भी ... कलयुत ... जाती है। समझाते कोई~~
ई भी नही। जैस विष्णु को नही समझते है। ल-न को भी नही समझते है। ब्र, वि, शं को भी नही
झते है। शंकर क्या है। ब्रह्मा तो यहाँ है। यह पवित्र बन कर शरीर छोड़कर आत्मा चली जोवगी अपने
। बच्चे भी जानते है कि हम इस छी-2 दुनियाँ के छी-2 शरीर को छोड कर चले जावेंगें अपने घर।
ा पुरानी दुनियाँ से वैराग है। यहाँ का कर्मबन्धन दुःख देने वाला है। अब बाप कहते है कि
ने घर चलो। वहाँ तो दुःख का नामो निशान नही होगा। पहले तो तुम अपने घर मे थे फिर राजधानी
आये। अब बाप फिर आये है पावन बनाने। अब तो असुरो का राज्य है नो। खान-पान आद कितना
दा है। क्या-2 चीजे मनुष्य खातेरहते है। चीनी लोग तो नाँग बलाये बिच्छु, आद सब खा जाते है। समझते
सूक गये। इनका जहर तो खत्म हो गया है फिर खाने मे क्या हर्जा है। हर चीज पाँच तत्वो से बनती
। तो उनको तल कर खा लेते है। यह बुधी तो देखो। मुख मे थोडि आद सब कुछ खा लेते है। आगे
ो मनुष्य का मास भी खाते थे। आदम खोर उनको ही कहा जाता है। देवियों को भी भोग लगाते
। कलकत्ते मे काली का भोग लगाते है पका कर। फिर उसको बाँट कर खाते है उसको महाप्रसाद कहते है।
ानि यों के पास तो खाने के लिये बहुत कुछ है। समुंदर मे कितने माल रहते है कच्छ, मच्छ आद।
ी पर देवताये ऐसी चीजें थोड़ेई खाते है। भक्ति तो देखो नो क्या है। मनुष्य की भी बलि चढाते है।
ाप कहते है यह भी ड्रामा बना हुआ हैं। पुरानी दुनियाँ ही सो फिरनई जरूर बननी है। अभी तुम
ा जानते हो कि हम सतोप्रधान बन रहे है। यह तो बुधी समझती है नो। इसमे तो चित्र नही हो
ो और भी अच्छा है। नही तो मनुष्य बहुत प्रशन पूछते है। बाबा ने 84जन्मों का चक्र समझाया है।
ा ऐसे-2 चन्द्र वंशी सूर्यवंशी .... बने। इतने तो हमने जन्म लिये है। यह बुधी मे ही रखना होता है।
ा तो बिना चित्रो के भी समझा सक्ते है। ... बुधी मनुष्य तो चित्रो मे भी समझते नही है।

चित्रों से तो और ही मूंझ जाते है। सूक्ष्म वतन को तो बिलकुल ही समझते नही है। तुम ध्यान में सूक्ष्म व
में जाते हो यहां कुछ है नही। ये ना है योग ना ही है ज्ञान। वेस्ट आफ टाइम होता है। यह तो सिर्फ
एक रसम ही है। समझाया जाता है कि कैसे-2 आत्मा को बुलाया जाता है। फिर वे रोते है। फिर पछता
होता है कि हमने बाबा का कहना नही माना है। यह सब बाते तो है लिटरेट की उसमे समय नही
बाबा भी समझाते रहते हैं कि बच्चे समय वेस्ट नही करो। बहुतो को रास्ता बताने का पुरषार्थ करना
करना है। महादानी बनो। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। जो भी आवे उनको ही यह समझ
और 84 का चक्र बुधी में बिठाओ। वर्ल्ड कीहिस्ट्री जागाफि कैसे रिपीट होती है। नटशेल मे सारा चक्र तुम्ह
बुधी मे है। तुम बच्चो को तो बहुत खुशी रहनी चाहिये। अभी मि [illegible] इस गनदी दुनिया से छुटते हो।
मनुष्य समझते है कि स्वर्ग नर्क यहां ही है। जिनको तो बहुतधन है तो समझते है कि अच्छे कर्म किये
है इसलिये ही सुख मिला है। अभी तुम बहुत अच्छे कर्म करते हो जो 2। जन्मलिये अबतुम सुख पाते हो
वो तो एक जन्म लिये समझते है कि हम स्वर्ग मे है। बाप भी कहते है कि वो तो है अल्प काल का
सुख। तुम्हारा है 2। जन्मो का स्वर्ग। जिसके लिये ही बाप कहते है कि सभी को रास्ता बताते जाओ।
बाप की याद ही से निरोगी बनेंगे और स्वर्ग के मालिक बनेंगे। स्वर्ग मे है राजाई उसको भी याद करो।
राजाई थी। अब नही है। भारत की ही बात है। बाकी तो सब है वारेस्प्लाटस। पिछाडी मे सब चले जा
फिर हम आयेंगे नई दुनियां मे। अब इतना समझाने मे चित्रो की थोडेईदरकार है। सूक्ष्म वतन मे विष्णु
क्या है। कुछ भी दरकार नही है। यह तो सिर्फ समझाने ही के लिये मूल वतन सूक्ष्म वतन आद दिखाय
दिखवाया है। समझाया जाता है बाकी है तो कुछ भी नही। शंकर की भी क्या दरकार है। यह तो भक्ति
मार्ग वालो ने चित्र आद बनाये है। तो हमको भी करेक्ट करके बनाने पड़ते है। नही तो कहेंगे बिलकुल
नास्तिक हो। चित्रो को भी नाम शास्त्रो को भी नाम [illegible] देते है। [illegible] करते लोग [illegible] इसलिये
ही करेक्ट करके बनाते है। ब्रहमा दवारा स्थापना शंकर दवारा विनाश। वास्तव मे तो यह भी ड्रामा मे नूंध
कोई भी कुछ करते थोडेई है। साईस दान अपनी ही बुधी से यह सब बनाते रहते है। मल कितना भी
कोई कहे कि बाम्बस आद नही बनाओ। परतु जिनके पास तो ढेर के ढेर पड़े है वो समुन्द्र मे थोडेई
डाल देंगे कि दुसरे नही बनावे। वो रखते है तो जरूर दुसरे भी बनावेंगे ही। अब तुम बच्चे जानते हो
सृष्टी का विनाश तो जरूर होना ही है। लडाईयां भी जरूर लगती है। विनाश होना है। वहां तो भक्ति
का अंश भी नही होता है। तुम अपना राज्य करते हो। चित्र आद कुछ भी नही। तुम अपना राज्य करते हो
हो। अभी बाप कहते है बच्चो तुम अब सबको कल्याण कारी बनो। किनकी दबी रहेगी धूड मे ... सफ
होगी उनकी जो कि खर्चे नाम धणी के। धणी कहते है कि अब इसमे ही खर्चा करो। यह कहानी
हासपिटल है। जो भी खावेंगे तो कल्याण ही ठहरे ना। धणी के नाम ही तुम खरचते हो जिसका ही फिर
तुमको रिर्टन मे 2। जन्मोको लिये मिलता है। यह दुनियां ही अवसत्महोती है इसलिये जितना भी हो सके
तुम धणी ही के नाम खर्च करते जाओ। धणी तो हमारा शिव बाबा है ना। भक्ति मार्ग मे भी धणी ही के
नाम करते है। बसे अब तो है डायरेक्ट। धणी के नाम पर बडी-2 [illegible] यूनिवरसिटी खोलो तो बहुतो क
कल्याण हो जावेगा। 2। जन्मो के लिये राज्य भाग पा लेंगे। नही तो यह धन दौलत आद सब यहां ही
हो जावेगा। भक्ति मार्ग मे खत्म नही होता है। अब तो खत्महोना है। जमरवर्चीपर तुमको ही रिर्टन
मे मिलेगा। धणी के नाम पर सबका कल्याण करो। तो 2। जन्मो का वैसा मिलेगा। कितना अच्छा समझाते है
फिर तो जिनकी तकदीर मे होता है वो खींचा करते रहते है। अपना घर बार भी सम्भालना है। उनका (बाबा
पीट [illegible] ही ऐसा था। एकदम जोर से नशा चढ गया। बाबा तो हमको बादशाही देते है फिर हम यह
[illegible]